कर्त्तव्यों का पालन करता था; और अपनी बहुमूल्य सम्मतियों से उसकी सहायता करता था। सेनानी सेना का प्रधान अधिकारी होता था। इसको राजा स्वयं चुनता था और कभी-कभी उसे सेना का नेतृत्व करने के लिए रणभूमि में भेजता था। ग्रामीण सैन्य और शासन-सम्बन्धी मामलों में ग्राम का नेता होता था।

सैन्य संगठन

ऋग्वेद में सेना का उल्लेख मिलता है किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह युद्ध या लूट-पाट के समय शत्रु से लड़ने के लिए संगठित कर ली जाती थी। इस समय तक स्थायी सेना की आवश्यकता का अनुभव नहीं हो पाया था। सेना का नेतृत्व राजा करता था और उसके बाद सेनानी का स्थान आता था। पैदल और रथ, सेना के मुख्य अंग थे और भाला, धनुष, तलवार तथा कुल्हाड़ा इस समय के मुख्य शस्त्र थे। युद्ध के लिए सेना के प्रयाण करते समय दुन्दुभी बजाई जाती थी। अश्वारोहियों की कोई अलग टुकड़ी सेना में नहीं होती थी। यद्यपि ऋग्वेद में तेज दौड़ने वाले अश्वों का उल्लेख कई स्थानों पर मिलता है।

न्याय-व्यवस्था

वैदिक आर्यों की न्याय-व्यवस्था सरल थी। न्याय का सर्वोच्च अधिकारी राजा था। दण्ड-विधान कठोर नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु दण्ड अभी अज्ञात था और हत्या जैसे गम्भीर अपराध के लिए भी मृत्यु दण्ड नहीं दिया जाता था।

निष्कर्ष

वैदिक सभ्यता आर्यों की सबसे प्राचीन सभ्यता है, किन्तु यह किसी भी रूप में अविकसित नहीं थी। आर्यों ने सभ्यता के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उन्नति की, लेकिन सबसे अधिक उल्लेखनीय बात उनके जीवन की उल्लासप्रियता है। आर्यों की धार्मिक विचारधारा में किसी प्रकार की नैराश्य भावना का समावेश नहीं होने पाया था। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण आशावादी था, साथ ही चिन्तनशीलता की वृत्ति भी उनमें विद्यमान थी। श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "आर्यों का धर्म सादा था जो प्रकृति के प्रत्येक तत्व को और उसकी प्रत्येक शक्ति को दैविक मानता था। यह वीरत्व और आनन्द के भाव से परिपूर्ण था जिसमें रहस्य का भाव जीवन को आकर्षक बनाता था और उनके मस्तिष्क को भयभीत बना सकता था।"

"It was a simple faith of theirs that attributed divinity to elements and force of nature; but it was a brave and joyous one."

—Rabindra Nath Tagore.